भारत सरकार

पर्यटन मंत्रालय

राज्य सभा

लिखित प्रश्न सं. 948

मंगलवार, 27 जुलाई, 2021/05 श्रावण, 1943 (शक)

को दिया जाने वाला उत्तर

उत्तर प्रदेश और बिहार में बौद्ध तीर्थ स्थलों का विकास

948. श्री राकेश सिन्हा:

क्या **पर्यटन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि उत्तर प्रदेश और बिहार में कई बौद्ध तीर्थस्थल मौजूद हैं;

(ख) पर्यटन के दृष्टिकोण से उन तीर्थ स्थलों में से कितने विकसित हैं और कितने अविकसित हैं;

(ग) सरकार इन तीर्थ स्थलों को विकसित करने हेतु बौद्ध देशों के पर्यटकों को आकर्षित करने और इन देशों के साथ सहयोग करने के लिए क्या क्या प्रयास कर रही है;

(घ) क्या सरकार की बौद्धों की अत्यधिक आबादी वाले देशों में बौद्ध उत्सव आयोजित करने की योजना है; और

(ड.) क्या मंत्रालय की पर्यटकों की सुविधा और उन्हें आकर्षित करने के लिए कुशीनगर (यूपी) और बोधगया (बिहार) के बीच बौद्ध सर्किट बनाने की कोई योजना है?

उत्तर

पर्यटन मंत्री (श्री जी. किशन रेड्डी)

(क): जी हां।

(ख) से (ड.): विभिन्न योजनाओं के तहत बौद्ध तीर्थस्थलों सहित विभिन्न पर्यटक गंतव्यों में पर्यटन अवसंरचना और सुविधाओं के विकास हेतु परियोजना प्रस्तावों की प्रस्तुति एक सतत प्रक्रिया है और स्वीकृत परियोजनाएं कार्यान्वयन के अलग-अलग चरणों में हैं।

पर्यटन मंत्रालय ने उत्तर प्रदेश तथा बिहार राज्यों में स्वदेश दर्शन, तीर्थस्थान जीर्णोद्धार एवं आध्यात्मिक विरासत संवर्धन अभियान पर राष्ट्रीय मिशन (प्रशाद) और पर्यटन अवसंरचना के विकास हेतु केंद्रीय एजेंसियों को सहायता नामक योजनाओं के अंतर्गत बौद्ध तीर्थस्थलों के विकास हेतु जिन परियोजनाओं को स्वीकृति दी है उनका विवरण निम्नानुसार है :

i. बौद्ध परिपथ को स्वदेश दर्शन योजना के अंतर्गत विकास हेतु अभिज्ञात थीमों में शामिल किया गया है। इस योजना के अंतर्गत वर्ष 2016-17 में निम्नलिखित परियोजनाएं स्वीकृत की गई हैं:

- 99.97 करोड रुपए की राशि से उत्तर प्रदेश में श्रावस्ती, कुशीनगर तथा कपिलवस्तु का विकास।
- 98.73 करोड रुपए की राशि से बिहार में बोधगया में सम्मेलन केंद्र का निर्माण।

ii. प्रशाद योजना के अंतर्गत वर्ष 2015-16 में 'वाराणसी का एकीकृत विकास-I' परियोजना को स्वीकृति दी गई थी जिसमें अन्य के साथ साथ निम्नलिखित दो घटक शामिल हैं:

- 7.34 करोड़ रुपए की लागत से धामेक स्तूप में साउंड एंड लाइट शो
- 2.20 करोड़ रुपए की अनुमोदित लागत से सारनाथ में बुद्ध थीम पार्क

iii. पर्यटन अवसंरचना के विकास के लिए केंद्रीय एजेंसियों को सहायता योजना के अंतर्गत वर्ष 2014-15 में 5.12 करोड़ रुपए की राशि से वाराणसी/सारनाथ में स्मारकों का प्रदीप्तिकरण संबंधी परियोजना (सारनाथ में धामेक स्तूप, सारनाथ में चौखंडी स्तूप, सारनाथ में ललकन का मकबरा और बनारस में मन महल) को स्वीकृति दी गई थी।

"बोधगया पर विशेष फोकस के साथ बौद्ध संस्कृति एवं पर्यटन के वैश्विक केंद्र के रूप में भारत के पुनरुद्धार के लिए एक समन्वित कार्यनीति" तैयार करने के मद्देनजर एक कार्ययोजना बनाई गई है । इस कार्ययोजना में चार वर्टिकल्स के तहत कदम उठाए जाने हैं : i) कनेक्टिविटी; ii) अवसंरचना तथा संभार तंत्र; iii) संस्कृति अनुसंधान, विरासत और शिक्षा; तथा iv) सार्वजनिक स्तर पर जागरूकता, संप्रेषण और पहुंच । इस कार्ययोजना के कार्यान्वयन की निगरानी के लिए पर्यटन मंत्रालय को नोडल मंत्रालय बनाया गया है।

बौद्ध जनसंख्या बहुल देशों सहित विदेशी बाजारों में उत्तर प्रदेश तथा बिहार में अवस्थित बौद्ध स्थलों के साथ-साथ विभिन्न बौद्ध स्थलों के संवर्धन और मार्केटिंग के लिए किए गए प्रयास निम्नानुसार हैं :

- भारत में बौद्ध गंतव्यों के संवर्धन के लिए पर्यटन मंत्रालय ने फिल्में तैयार की है।
- अतुल्य भारत 2.0 अभियान के एक भाग के रूप में बौद्ध स्थल संबंधी क्रिएटिव्स का उपयोग किया जा रहा है।
- पर्यटन मंत्रालय ने बौद्ध स्रोत बाजारों में टीवी, प्रिंट और डिजिटल मीडिया अभियान जारी किए हैं।
- पर्यटन मंत्रालय अंतरराष्ट्रीय बौद्ध कॉन्क्लेव (आईबीसी) का आयोजन करता है जिसमें विभिन्न स्रोत बाजारों से टूर ऑपरेटर, मीडिया, ओपिनियन मेंकर्ज तथा बौद्ध भिक्षु भाग लेते हैं।
- विदेशी बाजारों में भारत पर्यटन कार्यालय अनेक यात्रा एवं पर्यटन मेलो/प्रदर्शनीयों/एक्सपो में नियमित रूप से भाग लेते हैं जिनमें बड़ी संख्या में आने वाले आगंतुकों के बीच भारत के बौद्ध स्थलों का प्रचार किया जाता है।
- आसियान देशों में रोड शोज का आयोजन किया गया जिनमें भारत की बौद्ध विरासत को दर्शाया गया।
- पर्यटन मंत्रालय द्वारा मंत्रालय की अतुल्य भारत वेबसाइट पर बौद्ध स्थलों का संवर्धन किया जाता है।
- पर्यटन मंत्रालय ने भारत की समृद्ध बौद्ध विरासत के प्रदर्शन के लिए www.indiathelandofbuddha.in वेबसाइट तैयार की है।

*****